हिंदी साहित्य में हनुमत काव्य का औचित्य

क्षेमेंद्र भरद्वाज

शोध-छात्र

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय

संस्कृत काव्य की भांति हिंदी काव्यों में हनुमत काव्य का एक विशेष औचित्य है क्यूंकि जिस कथानक को लेकर संस्कृत साहित्य में हनुमत काव्य का उद्भव हुआ है उसके आधार को ग्रहण करके हिंदी साहित्य में 'हनुमत काव्य' का भी सृजन हुआ है|

हिंदी साहित्य में हनुमत काव्य का सृजन आदिकाल से ही दिखाई देता है,लेकिन इस काल में 'हनुमत काव्य' संबंधित पद्य बहुत कम मात्रा में मिलते हैं|लेकिन जब हम भक्तिकाल और रीतिकाल व आधुनिककाल के मध्य अध्ययन करते हैं तो 'हनुमत काव्य' का क्षेत्र कुछ अधिक प्राप्त होता है|

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' नामक पुस्तक में हनुमत काव्य से संबंधित अनेक पंक्तियों को उद्धृत किया है, वह अलग तथ्य है कि वे किस काल के काव्य के साथ आया है|आचार्य शुक्क ने एक स्थान पर अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में स्वामी रामानंद जी की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत किये हैं जिसमे 'हनुमत काव्य' से संबंधित तथ्यों का संकेत मिलता है|

आरती कीजै हनुमान लला की

दुष्ट दलन रघुनाथ कला से|

इन पंक्तियों में स्वामी रामानंद जी ने 'हनुमत काव्य' का बीजारोपण किया है,वह अलग तथ्य है कि स्वामी जी इस पंक्ति को 'हनुमत आरती' केलिए प्रयुक्त किया करते थे|यदि इस तथ्य को भी माना जाये तो यह सिद्ध होता है कि रामानंद जी के समय में 'हनुमत काव्य' का औचित्यएवं महत्व था|

जिस प्रकार भक्तिकाल के अंतर्गत राम काव्य और कृष्ण काव्य है उसी प्रकार इन उप-काव्यों के बीच 'हनुमत काव्य' का विशेष औचित्य है|आचार्य शुक्क के प्रति यह भी कहा जा सकता है कि जिस दौर में शुक्क जी राम से संबंधित तथ्यों पर विचार कर रहे हो सकता कि उसी समय उनको हनुमत काव्य का ओचित्य समझ में आया हो|इसीलिए उन्होंने इस काव्य के साथ भक्तिपरक रचनाओं के साथ रामानंद की इस आरती को अपने इतिहास में जगह दिया हो|

यहीं तक नहीं बल्कि आचार्य शुक्क ने अपने इतिहास में एक 'इदयराम' नामक कवि जो पंजाब के रहने वाले हैं ,उनकी रचना 'हनुमन्नाटक' का उल्लेख किया है जिसमें हनुमत संबंधित काव्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है |जिसका उल्लेख उन्होंने कुछ इस प्रकार किया है-

ए हो हनु!कहो भी रघुबीर कछु सुधि है सिय की छिति मांही |है प्रभु लंक कलंक बिना सुबसे तहां रावन बाग छाँही|

जीवति है ? कही बेई को नाथ, सु क्यों न मरी हम ते बिछुराही |

प्रान बसे पद पंकज में जम आवत है पर जावत नाही |

आचार्य शुक्क के इतिहास में लगातार 'हनुमत संबंधित काव्य की बहुलता देखकर यह कहा जा सकता है कि अवश्य ही आचार्य शुक्क कुछ विशेष तथ्यों का संकेत दे रहे हैं |

जब राम काव्य और कृष्ण काव्य की बात चल रही हो उस समय'हनुमत काव्य' की पंक्तियों के उल्लेख का क्या औचित्य हो सकता है यह तथ्य भी विचारणीय है|

हिंदी साहित्य में एक गणेश प्रसाद 'गंभीर' नामक कवि मिलते हैं |जिनकी रचना 'श्री हनुमान चरित' के नाम से प्रकाशित है,इन्हुने 'हनुमत काव्य' पर पांच सोपानों में रचित 'श्री हनुमान चरित' प्रकाशित कर हिंदी साहित्य में 'हनुमत काव्य' का विस्तार किया है |

गंभीर जी की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत किया जा रहा है जिसके माध्यम से इनकी रचनाओं में 'हनुमत काव्य' का ओचित्य समझा जा सकता है -

हनुमत चरित विमल मन भावन|

विविध ताप भय शोक नसावन |

इन पंक्तियों को गणेश प्रसाद जी ने अपने 'प्रथम सोपान' में रखा है|इनकी आगे की पंक्ति कुछ इस प्रकार है -

हनुमत चरित अगाध अपारा

जानत सुयश सकल संसारा |

इस कवि के बाद हिंदी काव्य में 'महावीर हनुमान' नामक पुस्तक प्राप्त होती है , जिसमें हनुमत काव्य से संबंधित अनेक काव्य प्राप्त होते हैं |'रसक' रचयता स्व.श्री राम जी व्यास हैं-

पुनि प्रसन्न मम दत्तवर ,यह हनुमत हित जान |

अमर सदा मम बज्रते ,रहे अमित बलवान |

पुनि हनुमत हि बिसदवर,दीन्हे मुदित कुबैर|

चंड-गदा ते अमर है ,कपि बिचरै चहुँ ओर|

इन कवियों ने इस प्रकार की रचना कर 'हनुमत काव्य' को समृद्ध किया है और इस काव्य की औचित्यगत अवधारणा को स्पष्ट किया|

इन कवियों की भांति हिंदी साहित्य के कवियों में 'हनुमत काव्य' से संबंधित अनेक रचनाएँ उपलब्ध है जिसका जिसका यहाँ उल्लेख किया जा रहा है |दृष्टान्त के रूप में गौ स्वामी तुलसीदास की रचना को रखा जा सकता है जैसे श्री रामचरित मानस, कवितावली, गीतावली, हनुमान चालीसा, हनुमान वाहक इत्यादि| गोस्वामी जी ने श्री रामचरित मानस के सुन्दर कांड में विशेष रूप से हनुमत काव्य संबंधित चौपाइयों पर बल दिया है जिसका उदहारण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है-

सुनि हनुमत हृदय अति भाए|

इस पंक्ति के बाद कवितावली की एक पंक्ति को देखा जा सकता है-

करत बिसोक लोक-कोकनद, कोक कपि

कहै जामवंत, आयो आयो हनुमानु सो|

इन पंक्तियों के आलावा गोस्वामी जी ने हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमान चरितम आदि में 'हनुमान काव्य' संबंधी

स्तुतिपरक रचनाओं को प्रस्तुत किया गया है | जिससे 'हनुमत काव्यधारा' को विशेष औचित्यगत शक्ति प्रदान होती है|

आचार्य शुक्क ने रसानुकुल शब्द योजना के ओचित्य से कवितावली की कुछ पंक्तियाँ उल्लिखित हैं जिसमें हनुमत काव्य स्पष्ट दिखाई देती है |

प्रबल प्रचंड बरिबंड बाहुदंड बीर,

धाए जातुधान, हनुमान लियो घेरिकै|

यहीं तक नहीं बल्कि हिंदी साहित्य के अलावा बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, पौराणिक साहित्य, वैदिक साहित्य आदि में 'हनुमत काव्य' प्राप्त होता है| एक बुंदेलखंड के सुविख्यात कवि 'मान' की चर्चा करना आवश्यक है क्यूंकि हमसब जानते है कि 'हनुमत काव्य' की सीमा सीमित है लेकिन ऐसा कुछ नहीं है | देखिये पूर्व कथित साहित्य के अलावा कवि 'मान' के यहाँ किस प्रकार से हनुमत साहित्य को आगे बढ़ाया जा रहा है|

महावीर सासा पूज बीरा ओ बतासा करे,

विपत को ग्रासा तन बासा अरि अंत को|

सिख-नख खासा रिद्ध सिद्ध को निवासा यह,

दास आसा पूरक पचासा हनुमत को|

यह सुविख्यात कवि 'मान' बुंदेलखंड के हैं| इनकी पुस्तक का नाम 'हनुमत पचासा' है| जिस छंद को इस पत्र में प्रस्तुत किया गया है, वह लेखक के 'हनुमत पचासा' का पचासवां छंद है|

इस प्रकार के अनेक कवियों से 'हनुमत काव्यधारा' को विशेष शक्ति प्राप्त हुई है|

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'हनुमत काव्यधारा' का औचित्य हिंदी साहित्य में इसलिये भी महत्वपूर्ण है क्यूंकि इस काव्य एवं साहित्य से अनपढ़ ग्रामीण सभ्यता के लूगों के प्रति जागरण का संचार हुआ है | वह अलग तथ्य है जो राम- काव्य और कृष्ण-काव्य के समानांतर राष्ट्रीय जागरण के औचित्य से जुड़ा हो| इसीलिये पुनः अंत में यही कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य में 'हनुमत काव्य' का औचित्य एक नवोन्मेष विचारों का सृजन भी है|

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1.हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, विजय प्रकाशन मंदिर वाराणसी संस्करण 2010 प्र. 93 वहीँ प्र.113

2.श्री हनुमत चरित(काव्य) गणेश प्रसाद गंभीर, हिंदी साहित्य कुटीर प्रकाशन वाराणसी संस्करण 1996 ई. प.27

3.वहीँ प.7

4.महावीर हनुमान लेखक राम जी व्यास, महंत, भोंसला घाट, वाराणसी प्रकाशन-साहित्य संधान कलकाता 1889 ई.प.51

5.वहीँ प.51

6.श्री रामचरित मानस गुटका (सुन्दर कांड) गोस्वामी तुलसीदास, गीयता प्रेस गोरखपुर संस्करण सं.2058 प्रथम संस्करण प.6

7.कवितावली, गोस्वामी तुलसीदास गीता प्रेस गोरखपुर सं.2064 अट्ठाववनवां पुनर्मुद्रण प.44

8.हिंदी साहित्य का इतिहास आ.राम चन्द्र शुक्ल प्रकाशक हिंदी साहित्य कुटीर वाराणसी, सन्स्करन१९ ९६ई.प.१०३

9.वीरों में बीर महावीर, ले. जगदेश चन्द्र मिश्र,विवेकानंद प्रकाशं नाग्वा लंका वाराणसी,सं.चेत नवरात्र १९९५ ई.प.14